कर्म करते सदा स्मृति रहे कि मैं परमात्मा की संतान हूँ

- गतांक से आगे... भगवान कहते हैं मेरा चिंतन करने से, मेरा अनन्य भक्त बनने से तुम निश्चित रूप से मेरे पास आओगे, ये मेरा वचन है। भगवान भी वचनबद्ध हो जाता है। कितना सुंदर ये एक आश्वासन मिलता है कि अगर हम ईश्वर का चिंतन करेंगे, उसके अनन्य भक्त बन जायेंगे, तो निश्चित ही ईश्वर के पास चले जायेंगे। ये भगवान का वचन है हमारे लिए। इसलिए हे अर्जुन, सर्व धर्मों का परित्याग अर्थात् जो अनेक हद के धर्म में आ गये हैं कि ये मेरा धर्म है, ये तेरा धर्म है, या इस प्रकार की भावनाओं में हम जो आ गये हैं, तो सर्व धर्म का परित्याग करके, तुम मेरी शरण में आ जाओ। इससे श्रेष्ठ धर्म और कोई नहीं है। धर्म माना जो हमें श्रेष्ठ आचरण करना सिखाए, धर्म माना जो जीवन में श्रेष्ठ धारणा करना सिखाए, ये है सच्चा धर्म। बाकी धर्म के नाम पर लड़ाई-झगड़े को बढ़ावा देना ये कोई धर्म नहीं है। इसलिए भगवान कहते हैं तुम सर्व धर्म का परित्याग करके मेरी शरण में आ जाओ, तो मैं तुम्हें सर्व पापों से मुक्त कर दूंगा। ये भी भगवान का वचन हम आत्माओं के प्रति है। सब दैहिक धर्म को छोड़कर एक ही धर्म हमारा है कि मैं आत्मा परमात्मा की संतान हूँ और परमात्मा की संतान होने के नाते मेरे कर्म कैसे होने चाहिए, मेरी विचारधारा कैसी होनी चाहिए? मेरे जीवन की धारणाएं कैसी होनी चाहिए? सब स्पष्ट हो जाता है।

जिस प्रकार आज एक राजा का बेटा राजकुमार है। उस राजकुमार को सिखाना नहीं पड़ता है कि तू राजा का बेटा है इसलिए तुम्हें कैसे चलना चाहिए? कैसे बोलना चाहिए? कैसे खाना चाहिए? कैसे व्यवहार करना चाहिए? सिखाया नहीं जाता है और यह बात सिखाने वाली है भी नहीं। लेकिन

इससे बड़ा आईना और कोई नहीं है कि मैं परमात्मा की संतान हूँ तो मेरी विचारधारा कैसी होनी चाहिए। मेरे विचारों में किसी के प्रति द्वेष की भावना नहीं होनी चाहिए। अगर हम भगवान के बच्चे, दुनिया की सुप्रीम अथॉरिटी, तीनों लोकों के ब्रह्माण्ड के मालिक के बच्चे हैं तो हमारा उठना, बैठना, चलना, फिरना, बोलना, व्यवहार करना सब कैसा होना चाहिए ये हमें ध्यान रखना है।

-ब्र.कु. उषा,वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

जैसे ही यह स्मृति अंदर में रहती है कि मैं राजा का बेटा राजकुमार हूँ तो अपने आप वो संस्कार राजसी होने लगते हैं। अपने आप उसके बोल-चाल, व्यवहार, कर्म में वो राजसी भाव झलकने लगता है। ठीक इसी प्रकार अगर हम भी ये स्मृति में रखें कि मैं परमात्मा की संतान हूँ, इससे बड़ा धर्म और क्या हो सकता है। मैं आत्मा परमात्मा की संतान हूँ और इस स्मृति को जागृत रखें तो हमारा बोल-चाल, व्यवहार, कर्म कैसा होगा? क्या परमात्मा के बच्चे कहलाने जैसा मैं हूँ? स्वतः स्पष्ट हो जाता है कि इससे बड़ा आईना और कोई नहीं है कि मैं परमात्मा की संतान हूँ तो मेरी विचारधारा कैसी होनी चाहिए। मेरे विचारों में किसी के प्रति द्वेष की भावना नहीं होनी चाहिए। अगर हम भगवान के बच्चे, दुनिया की सुप्रीम अथॉरिटी, तीनों लोकों के ब्रह्माण्ड के मालिक के बच्चे हैं तो हमारा उठना, बैठना, चलना, फिरना, बोलना, व्यवहार करना सब कैसा होना चाहिए? इससे बड़ा धर्म और क्या हो सकता है। इसलिए भगवान ने कितना स्पष्ट शब्दों में कहा कि हे अर्जुन, सर्व धर्मों का परित्याग करके तुम मेरी शरण में आ जाओ, मैं तुम्हें सर्व पापों से मुक्त कर दूंगा। उसके लिए सहज भाव यही है कि उस स्मृति को हम जागृत करें।

भगवान ने कहा कि यह गुह्य गोपनीय ज्ञान ऐसे पुरुष को कभी नहीं कहना जो आत्म-संयमी न हो, जो एकनिष्ठ न हो, जो भक्त न हो और जो भगवान से द्वेष करता हो। उनको यह गुह्य गोपनीय ज्ञान समझ में आने वाला भी नहीं है। परंतु जो पुरुष मुझसे प्रेम करके इस गुह्य ज्ञान का उपदेश मेरे भक्तों को बताता है, वह शुद्ध स्थिति को प्राप्त कर मेरे पास आएगा। इस संसार में उससे बढ़कर कोई अन्य सेवक न तो मुझे अधिक प्रिय है और न कभी होगा। यह सिर्फ आज की बात नहीं है उससे अधिक प्रिय और कोई होगा भी नहीं।

- क्रमशः

यदि कोई तुमसे नाराज़ हो जाए...

कई लोग जल्दी ही नाराज़ हो जाते हैं। कलियुगी दोस्तों का तो ये रोज़ का मनोरंजन है। कोई मनचाही वस्तु न मिली तो उतर गया चेहरे का रंग। किसी ने कुछ असहनीय कह दिया और बिगाड़ बैठे मूड, किसी ने दिल को चुभने वाले बोल, बोल दिये और चले गये कोप भवन में...।

नाराज़ होने की प्रवृत्ति बड़ी खराब है। कोई बच्चा रूस जाये बस उसे मनाने में माँ को बड़ी भारी कीमत चुकानी पड़ती है। यद्यपि रूसने के पीछे प्यार भी समाया होता है। तो भी रूसना कोई अच्छी बात तो नहीं है। खुशी मनुष्य जीवन का खज़ाना है। रूसने वाले का यह खज़ाना लुट जाता है।

आपके कटुवचन सुनकर या गलत व्यवहार से यदि कोई नाराज़ हो जाए तो आप उसे राज़ी करने की सोचें। परन्तु कई बच्चे या बड़े रुसने को एक हथियार के रूप में भी यूज़ करते हैं। वे बिना कुछ लिये राज़ी ही नहीं होते। आपको उनकी खुशामद भी करनी पड़े परन्तु रूसे को तो मनाना ही चाहिए अन्यथा वे ये सोचकर और ज़्यादा नाराज़ होगें कि हमें कोई मनाने भी नहीं आता।

कई महारथी ऐसे भी होते हैं कि वे एक बार नाराज़ हो गये तो फिर राज़ी होते ही नहीं। आपसे सम्बन्ध भी तोड़ लेते हैं और बात भी नहीं करते या नॉर्मल होने में लम्बा समय लगाते हैं। वे चाहते हैं कि आप अपनी गलती महसूस करें और उसे फिर रिपीट न करें।

गलती केवल नाराज़ होने वाले की नहीं बल्कि करने वाले की भी होती है। आपका गलत व्यवहार, गलत शब्द, गलत भावना व दूसरे के आत्म सम्मान को ठेस पहुंचाना - ये कारण बनते हैं, दूसरे की नाराज़गी के। आप स्वयं में परिवर्तन करें, दूसरों के सामने किसी का अपमान न करें तथा दूसरों के सम्मान अनुकूल शब्द बोलें। और यदि कोई आपसे नाराज़ हो ही गया हो तो आप स्वयं उनसे बातें करें, अपनी भूल स्वीकार करें और यदि बात ज़्यादा ही बड़ी हो तो क्षमा मांगने में भी संकोच न करें।

परन्तु यदि ऐसा करने की हिम्मत आप नहीं जुटा पा रहे हैं तो उन्हें आत्मिक वृत्ति से देखें, मन में उनके लिए स्नेह पैदा करें। दूसरों से उनकी महिमा करें। उन्हें अच्छे वायब्रेशन्स दें तथा मन ही मन उनसे बात करें। उनकी नाराज़गी अवश्य की दूर हो जायेगी।

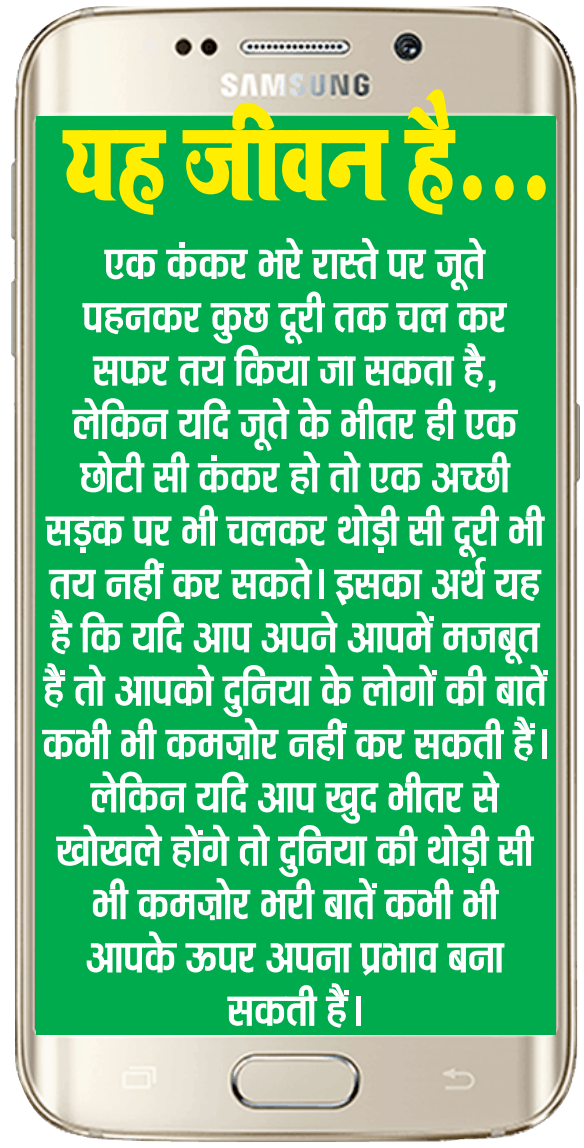

ख्यालों के आईने में...

इस संसार में सबसे अधिक प्रसन्न व्यक्ति वही है जो अन्य लोगों की प्रसन्नता को बढ़ावा देता है और श्रेष्ठ व्यक्ति भी वही है, जो दूसरों के दुःख में दुःख, और दूसरों के सुख में सुख अनुभव करता है।

जो सम्मान से कभी गर्वित नहीं होते, अपमान से क्रोधित नहीं होते, और क्रोधित होकर भी जो कभी कठोर नहीं बोलते, वास्तव में वे ही 'श्रेष्ठ' होते हैं।

रुड़की-न्यू आदर्श नगर(उत्तराखण्ड)। त्रिमूर्ति शिवजयंती के अवसर पर शिवध्वजारोहण करते हुए ब्र.कु. रानी,सहारनपुर, ब्र.कु. लक्ष्मी चंद, ब्र.कु. सन्तोष, डॉ. अमित तंवर, ब्र.कु. कुंवर सिंह सैनी तथा अन्य।

दिल्ली-सीताराम बाजार। शिव जयंति का आध्यात्मिक मर्म बताते हुए ब्र.कु. सुनीता। मंचासीन हैं एसएचओ सुनील कुमार और चौंकी इंचार्ज योगेन्द्र जी।

कोसीकलां-छाता। शिव जयंती के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए उप जिला अधिकारी चंद्र प्रकाश, नगरपालिका ई.ओ. शुचिता, ब्र.कु. ज्योत्सना तथा अन्य।